पाठ - 14

शिर्क और उसकी किस्में

الدرس الرابع عشر - هندي

الشرك وأنواعه

शिर्क यह है कि कोई इंसान अल्लाह की रबूबियत, उलूहियत और उसके नामों व गुणों में किसी को उसके बराबरी का समझे। शिर्क की दो क़िस्में है एक बड़ा शिर्क और एक छोटा शिर्क।

शिर्के अकबर यानी बड़ा शिर्क : अल्लाह को छोड़कर किसी ग़ैर की इबादत करना। शिर्क की इस क़िस्म को करने वाला इंसान यदि बिना तौबा किये हुए मर जाता है तो वह हमेशा–हमेश के लिए जहन्नमी रहेगा। शिर्क की यह क़िस्म सारे नेक आमाल को बर्बाद कर देती है। अल्लाह तआला ने कुरआन में एक जगह फरमाया है:

यानी, "यदि यह मान लिया जाए कि ये लोग इस तरह का बड़ा शिर्क करते हैं, तो जो कुछ ये आमाल करते थे, वे सब बेकार हो जाते। (सूरह अलअनआम, 88) शिर्के अकबर को अल्लाह तआला बिना सच्ची तौबा किये कभी माफ़ नहीं करता। अल्लाह तआला फ़रमाता है: यानी, "निष्चित ही अल्लाह तआला अपने साथ शिर्क किये जाने को नहीं बख़्शता और उसके सिवा जिसे चाहता है बख़्श देता है और जो अल्लाह के साथ शरीक बनाये उसने बहुत बड़ा गुनाह और बोहतान बांधा। (सूरे निसा–48) शिर्के अकबर की क़िस्मों में गैरूल्लाह को पुकारना, गैरूल्लाह के लिए नज़्रो नियाज़ करना, गैरूल्लाह के लिए जिब्ह करना आदि। या इंसान अल्लाह को शरीक ठहराकर उनसे ऐसी मुहब्बत करे जैसी अल्लाह से मुहब्बत होनी चाहिए। जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: यानी, "कुछ लोग ऐसे भी हैं जो औरों को अल्लाह का शरीक ठहराकर उनसे ऐसी मुहब्बत रखते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह से होनी चाहिए। (अलबक़रा, 165)

शिर्के असग़र यानी छोटा शिर्क : ये उन कर्मों को कहते हैं जिनको किताब व सुन्नत में शिर्क कहा गया है। लेकिन ये बड़े शिर्क नहीं कहलाते। शिर्क की यह क़िस्म इंसान को दीन से ख़ारिज नहीं करती। अलबत्ता तौहीद' में कमी करती है। जैसे थोड़ा बहुत दिखावा या यह कहना कि यदि अल्लाह और आप जो चाहें। या यह कहना कि यदि अल्लाह और आप न होते, यह अक़ीदा रखे बग़ैर कि अल्लाह के सिवा किसी दूसरे की क़सम खाना कि अल्लाह के सिवा जिस की क़सम खा रहे हैं, वह अल्लाह के सिवा किसी भी तरह का नफ़ा नुक़्सान नही पहुंचाता है। या जो अल्लाह ने और अमुक व्यक्ति ने चाहा, आदि कहना। इस वजह से कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है: "मैं तुम लोगों के सिलसिले में सबसे ज़्यादा छोटे शिर्क से डरता हूं।आपसे इसके बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया कि वह दिखावा है। इसे इमाम अहमद ने जैय्यिद सनद से रिवायत किया है। इसी तरह से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान है: जिस किसी ने अल्लाह के सिवा किसी दूसरे के लिए क़सम खायी, उसने शिर्क किया। (सुनन अबू दाऊद 2829) तावीज़ बांधना और छल्लों को लटकाना, बीमारियों या मुसीबतों को दूर करने या उससे बचने के उद्देश्य से या धागा पहनना, जैसे आमाल शिर्क के उस क़िस्म में आते हैं। यदि कोई इंसान यह अक़ीदा रखता है कि ये चीज़ें अपनी ज़ात से नफ़ा या नुक्सान पहुचाती हैं, तो ऐसी स्थिति में यह बड़ा शिर्क हो जाता है।